Hindi Khabar – October 2018

हिन्दी शिक्षा संघ (दक्षिण अफ्रीका)

HINDI SHIKSHA SANGH – South Africa

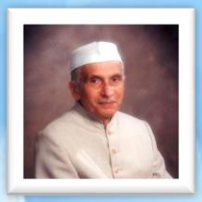

Founder: Pandit Nardevji Vedalankar
Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
April 25, 1948

2018:701 Students write Hindi Shiksha Sangh: Junior Grades Final Examination

The Academic Committee led by Srm Shireen Behadar, as Chairperson held the Junior Grade Examination on Sunday, October 21, 2018. The table below reflects the number of candidates per school, per region. A total of 701 students sat for these examinations. 204 in Prathma, 150 in Prathmik, 108 in Prarambhik, 95 in Prakash and 144 in Pradeep. The Senior Grade examination is scheduled for November 24 and 25, 2018. They will write two papers, one on literature and the other on grammar.

NEWCASTLE

No	PATSHALAS	PRATHMA	PRATHMIK	PRARAMBHIK	PRAKASH	PRADEEP	PRAVESH	TOTAL
1	NEWCASTLE HINDI PRACHARNI SABHA	7	1	4	4	2	0	18
	TOTAL	h7	1	4	4	2	0	18

DURBAN CENTRAL – BURNWOOD

No	PATSHALAS	PRATHMA	PRATHMIK	PRARAMBHIK	PRAKASH	PRADEEP	PRAVESH	TOTAL
1	RESERVOIR HILLS HINDU SEVA SAMAJ	6	8	7	10	0	8	39
2	NEWLANDS CULTURAL SOCIETY	1	8	0	1	1	0	11
3	SHRI VISHNU HINDI PATSHALA (SEA COW LAKE)	1	3	0	3	0	0	7
4	DURBAN HINDU TEMPLE	16	8	10	11	8	3	56
5	SRI HINDI NIKETAN	1	3	6	6	4	1	21
6	REGA HINDI PATSHALA	0	1	0	8	0	2	11
7	SHREE RAMAYAN SABHA	0	0	0	0	1	0	1
8	SHRI SIDDH DATA ASHRAM WESTVILLE	6	1	5	0	0	0	12
9	SANSKRUTI VIDYA BHAVAN	9	9	3	3	0	0	24
10	HINDI VIDYA PATSHALA	8	4	5	0	0	0	17
11	HILLGROVE HINDU SOCIETY SHRI VISHNU PAATSHALA	2	2	0	0	0	0	4
	TOTAL PER GRADE	50	47	36	42	14	14	203

NORTH COAST - LOWER TUGELA

No	PATSHALAS	PRATHMA	PRATHMIK	PRARAMBHIK	PRAKASH	PRADEEP	PRAVESH	TOTAL
1	LOWER TUGELA SABHA HINDI PATSHALA	1	4	1	0	1	0	7
	TOTAL PER GRADE	1	4	1	0	1	0	7

NORTH COAST – PHOENIX

No	PATSHALAS	PRATHMA	PRATHMIK	PRARAMBHIK	PRAKASH	PRADEEP	PRAVESH	TOTAL
1	PHOENIX HINDI PATSHALA	7	11	13	10	11	0	52
2	SHREE SANATHAN DHARAM SATSUNG SABHA	10	10	0	0	0	0	20
	TOTAL PER GRADE	17	21	13	10	11	0	72

NORTH COAST – VERULAM

No	PATSHALAS	PRATHMA	PRATHMIK	PRARAMBHIK	PRAKASH	PRADEEP	PRAVESH	TOTAL
1	BRINDHAVEN HINDI PATSHALA	7	7	6	3	1	3	27
2	VED DHARAM SABHA VERULAM HINDI PATSHALA	8	3	9	1	0	1	22
3	VISHWAROOP HINDI PATSHALA	4	6	1	1	1	2	15
4	SHREE RADHA KRISHNA TEMPLE	15	18	0	0	0	0	33
	TOTAL PER GRADE	34	34	16	5	2	6	97

CHATSWORTH / SOUITH COAST - HINDI SHIKSHA SANGH

No	PATSHALAS	PRATHMA	PRATHMIK	PRARAMBHIK	PRAKASH	PRADEEP	PRAVESH	TOTAL
1	KENDRA HINDI PATSHALA	18	14	15	11	8	13	79
2	SHRI VISHNU HINDI PATSHALA (ARENA PARK)	2	1	2	0	0	0	5
3	SHALLCROSS HINDU SABHA	4	1	7	5	0	0	17
4	GITANJALI HINDI PATSHALA	4	0	1	0	0	1	6
5	ARYA YUVUK SABHA ABH	3	0	0	0	0	1	4
6	DIVYA SHAKTI HINDI PATSHALA	7	0	1	0	0	3	11
7	MOORTON HINDI PATSHALA	2	1	0	1	7	3	14
	TOTAL	40	17	26	17	15	21	136

CHATSWOTH / SOUTH COAST – ISIPINGO

No	PATSHALAS	PRATHMA	PRATHMIK	PRARAMBHIK	PRAKASH	PRADEEP	PRAVESH	TOTAL
1	MEREBANK WOONATHEE SABHA	2	2	0	4	0	0	8
2	ISIPINGO HINDI SABHA	5	4	0	0	1	1	11
3	IDM HINDI PATSHALA	0	0	1	6	0	0	7
4	YAS CLAIRWOOD	2	2	0	0	0	0	4
	TOTAL	9	8	1	10	1	1	30

UMKOMAAS

No	PATSHALAS	PRATHMA	PRATHMIK	PRARAMBHIK	PRAKASH	PRADEEP	PRAVESH	TOTAL
1	DAKSHIN PRATH HINDI PATSHALA	0	4	1	0	1	0	6
2	MARBURG HINDI PATSHALA PORT SHEPSTONE	11	0	0	0	0	0	11
	TOTAL	11	4	1	0	1	0	17

GAUTENG

No	PATSHALAS	PRATHMA	PRATHMIK	PRARAMBHIK	PRAKASH	PRADEEP	PRAVESH	TOTAL
1	BENONI HINDI PATSHALA	11	08	05	02	02	4	32
2	DAKSHINA HINDI PATSHALA	01	00	00	00	00		
2	MIDRAND HINDI PATSHALA	02	00	01	00	00	0	3
3	RANDBURG CULTURAL SOCIETY	02	02	04	00	00	0	8
4	CENTURION HINDU SOCIETY	12	00	00	00	00	0	12
5	CHAMAKTE SITARE HINDI PATSHALA	02	04	00	05	00	0	11
6	VISHNU MANDIR VIDHYALAY GAUTENG	01	00	00	00	00	0	1
7	WESTRAND HINDI GYAN SAGAR GAUTENG	04	00	00	00	00	0	4
	TOTAL	35	14	10	07	02	4	71

Some Examination Centres in Pictures

Verulam: Kwazulu-Natal

Reservoir Hills: Kwazulu-Natal

Midlands: Kwazulu-Natal

Midrand – Gauteng

Continued from last issue: …

***South Africa: Professor Rambhujan Sitaram writes on* नेटाली हिन्दी**

Natalie Hindi" in South Africa

नहिं पराग नहिं मधुर मधुनहिं विकास एहि काल ,
अलि कलि में ही बन्ध्यो आगे कवन ,हवाल
(कविवर बिहारी)

आधुनिक / जागरण काल आतेआते मानवीय समस्याएँ एवं संघ-र्ष अपने सम्मिलित प्रभाव से संपूर्ण समाज को विघटित कर देती , यदि साहित्य और दर्शन न होते ।

प्रवासी भारतीय अपनी भाषा का नाम भी ठीक नहीं जानते रहे होंगे)ग्रियर्सन – मिस्त्री 1991: (121 और इस समस्या को और भी जटिल बनाती हैवह स्थिति जि ,से मिस्त्री ने "भोजपुरी को हमेशा गलती से हिन्दी नाम देना" कहा है 1991): 1 (। फिर भी हिन्दी भाषी इन कारणों से कभी परेशान नहीं हुए । जब गिरमिटिया भारतीय नेटाल में आये, उस समय South Africa नामक कोई देश नहीं था । अथः उनका इस तरह से गाना स्वाभाविक थाः

कुली नाम धराया कुली नाम धराया
नटालवा में आय के भजन करो भइयामिस्त्री) 1991:198)

उन्होंने अपनी भाषा को नेटाली नाम से जोड़कर अपनी वास्तविकता के और भी निकट खींच लाए । नीचे हिन्दी क्षेत्र की उपभाषाओं के नमूने द्वारा उन में साम्य स्पष्ट किया जाएगा । तथा उन्हें हिन्दी के अन्तर्गत रखने की आवश्यकता भी दिखेगी । हिन्दी के इन घटकों को स्वतंत्र रूप तथा मान्यता प्रदान कर दी जाएगी तो उस (2) तथा ,संविधान की अष्टम् अनुसूची में जोड़ना पड़ेगा (1) उपभाषा/ बोली के बोलनेवालों की संख्या हिन्दी से घटाना पड़ेगा और नयी संवैधानिक भाषा के आधार पर स्वतंत्र राज्य की (3) माँग हो सकती है । मैं मानता हूँ कि यह सब राजनीतिक बातें हैतथापि ह ,िन्दी का भारत की गरिमा एवं विश्व में उसकी प्रतिष्ठा में जो स्थान हैवह क्षीण हो जाएगा । क्योंकि ऐसे प् ,रयत्न हो चुके हैंमैं दृष्टान्त , द्वारा अपने वक्तव्य का समर्थन करना चाहता हूँ । 17 को 2002 मई सन् राज्यसभा में एक गैरसरकारी संविधान संशोधक विधेयक प्रस्तुत किया गया थाजिसका उद्देश्य था राजस्थानी , को अष्टम् अनुसूची में स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता दिलाना)राजेन्द्र शंकर भट्ट 2003:(30 । ऐसी मांगों से हिन्दी की रक्षा कैसे हो सकती है बिना यथार्थ के जाने ,? गाँधीजी ने हिन्दुस्तानी को समर्थित किया था । पंडित नेहरू ने भी राजभाषा के रूप में आमफ़हम की भाषा हिन्दी को समर्थन दिया था । उसको अब संकुचित करना कुचेष्टा ही है ।

हिन्दी की बोलियों को भाषा की गरिमा प्रदान करने के स्थान परबोलियों को हिन्दी की सहायक तथा पोषक बनाना उचित होगा । , जिस प्रक्रिया से बोलियाँ भी समृद्ध होंगी । इसी आशय का संकल्प वर्षों पूर्व अवधी आकादमी के अधिवेशन में पारित हुआः हिन्दी की बोलियों या लोकभाषाओं के अध्ययन-अनुसंधान ,संवर्द्धन एवं विकास का उद्देश्य राष्ट्रभाषा की मुख्य धारा को शक्तिशाली बनाना तथा उसके विराट रूप को भारत तथा विश्व में उजागर करना हो 2007 लल्लन प्रसाद व्यास): (3 ।

गिरमिटिया हिन्दी या रामचरितमानस की हिन्दी ?

भारत में कोई भी आन्दोलन अपना परिणाम दीर्घ काल के बाद दिखाता है । भारतेत्तर देशों में मानक भारतीय राजभाषा हिन्दी का अध्ययन अध्यापन होता हैतथा फ़ीजी , एवं सूरीनाम में बोलियों से विकसित फ़ीजी बात और सरनामी में साहित्य सृजन भी हो रहा

है । इन गिरमिटिया देशों में कोई राजनीतिक उद्देश्य से इन नयी भाषाओं में सृजनकार्य किया जा रहा है । नेटाल / दक्षिण अफ़्रीका में एक समय था जब भोजपुरीअवधी मिश्रित- साउथ अफ़्रीकन भोजपुरी अस्तित्व में थी और ,अनुसंधान द्वारा मिस्त्री ने बहुत हद तक उसकी विशेषताओं की खबर भी लिपिबद्ध कर दी । भोजपुरी के मोह का संवरण करके मानक हिन्दी को स्वीकार करना और भोजपुरी में संचित लोक साहित्य तथा लोकगीतों का हर्षपूर्वक प्रयोग करना एक सुगम मार्ग होगा । जैसे कि अनेक विद्वानों ने स्वीकार किया हैः अवधी एक साहित्यिक भाषा या बोली हैऔर रामचरितमानस के होते वह , क्षतिग्रस्त नहीं होगी । एक तथ्य और सामने आता है 1995) कि रामचरितमानस पढ़ने के लिए भारतीय लोग हिन्दी पढ़ते हैं । विमलेश कांति वर्मा -: (342 ने अपना मत निम्न प्रकार प्रकट कियाः

गिरमिटिया मजदूरों के रूप में मोरीशस दक्षिण अफ़्रीका आदि देशों ,फ़ीजी ,सूरीनाम ,में गये । भारतीयों की रामचरितमानस पढ़ने की लालसा ने हिन्दी अध्ययन के लिए प्रेरित किया । अवधी में लिखे रामचरितमानस ने हिन्दी शिक्षण को विशेष प्रोत्साहन दिया ।उषा शुक्ल ने अपने रामचरितमानस संबंधी ग्रन्थों तथा प्रकाशित आलेखों में इसी आशय के विचार प्रकट किए है यथा 2011):(181:

गोस्वमी तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस के द्वारा दोहरा लक्ष्य साधा है -स्वांत सुखाय हेतु उन्होंने जन भाषा में श्री राम के गुणों का गान किया और साथ-साथ हिन्दी का समर्थन किया, ताकि वह अमर हो जाएदुर्भाग्यवश भोजपुरी की निधि में मानस जैसा रत्न नहीं था, जिससे वह जनता की जिह्वा पर बनी रहती । यह भी ध्यातव्य है कि रामचरितमानस का आध्यात्मिक आकर्षण अवधी भाषा में रचे जाने से है, लोग तुलसीदास के दोहे, चौपाई तथा छन्द पढ़ने के लिए हिन्दी सीखते हैं और मानस का गायन और पाठ आनन्द का विषय है । वैसे अंग्रेजी में कई उत्तम अनुवाद प्राप्त हैः उनका प्रयोग केवल सहायक के रूप में होता है । श्री रामचरितमानस ने अवधी भाषा को अमरता प्रदान की, और गोस्वमी तुलसीदास ने हिन्दी को एक विश्व भाषा बनाया । अन्यथा, फ़िल्म “संत तुलसीदास” के गाने के शब्दों में “तुलसी न होते तो हिन्दी कहीं पड़ी होती” ।

एक कहावत है अंग्रजी में – नाम में क्या रखा है ? विदेशों में प्रवासियों के साथ भाषा को लेकर यदि संघर्ष करना पड़ा – बोलियों को त्यागकर मानक हिन्दी का ग्रहण करना, तो भारत में भी असमंजस में डाल देने वाली स्थितियाँ उत्पन्न हुई । महात्मा गाँधी दक्षिण अफ़्रीका में टूटी-फूटी हिन्दी अथवा अवधी / भोजपुरी प्रधान हिन्दी या नेटाली को सभी भारतीयों को सीखने को प्रेरित किया, जबकि अंग्रेजी अथवा स्थानीय भाषा जूलू का ज्ञान अधिक लाभदायक होता । उनके प्रयत्न में अंग्रेजी अवश्य बाधास्वरूप सामने आयी) गाँधी 1970:164(।

गाँधीजी ने बोलियों / उपभाषाओं का नाम नहीं लिया । उनका मतलब था सरल ,सर्वग्राह्य भाषा से जो राष्ट्रभाषा हो सकती थी । भारत में जब राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा का प्रश्न उठा तो उन्होंने हिन्दी/ हिन्दुस्तानी /उर्दू की सूक्ष्मताओं को छोड़कर खिलाफ़त प्रसंग में कहा थाः

दिल्ली के मुसलमानों के सामने मुझे शुद्ध उर्दू में लच्छेदार भाषण नहीं करना था – बल्कि अपना अभिप्राय टूटी-फूटी हिन्दी में समझा देना था । यह काम मैं मजे से कर पाया) 1970:438 (। वही हिन्दी / उर्दू जब हिन्दुस्तानी के परिधान में अवतरित हुई तो सर्वमान्य हो गयी) इर्फ़ान हबीब –“गाँधीजी”1995 :21(।

गाँधीजी के टूटी-फ़ूटी विशेषण से मतलब है हिन्दी का सर्वसुलभ होना । यह अर्थ कदापि नहीं निकालना चाहिए कि वह बोली जो हिन्दी के निर्माण में घटक हो ,वह अपूर्ण ,पिछड़ी हुई अथवा भद्दी है । स्वमी भवानी दयाल संन्यासी मानक हिन्दी के भक्त आर्य समाजी बनने से पहले हो गये थे । “प्रवासी की आत्मकथा”) 1947:50 (में उन्होंने लिखा “गाँव वाले अशिक्षित और अज्ञानी थे ,उनका रहन-सहन गंदा और बोली बहुत भद्दी थी ।”

उन्होंने ये पंक्तियाँ उस अनुभव के बारे में लिखी जो 12 वर्ष की आयु में दक्षिण अफ़्रीका से अपने पूर्वजों के गाँव पहुँचे) बिहार में (। उन्होंने नेटाली "हिन्दू" का प्रयोग किया वरन् नेटाली "हिन्दी" का नहीं । उन्होंने "टूटी-फूटी" हिन्दी को पहचाना) 1947:169(और समझौता किये बिना उसकी उपयोगिता को स्वीकृति दी । भाषा को लेकर हीन भावना सर्वत्र देखने को मिलती है । विशेषतः उन लोगों में जिन्हें भवानी दयाल ने "निरक्षर भट्टाचार्य" संबोधन से विभूषित किया । ऐसे लोग अपनी "जंगली" भाषा को हीन समझकर दूसरों को बहकाने के लिए कह देते हैं – वह यहाँ नहीं आगे बोली जाती है)राजेन्द मिस्त्री 1991 : 21(स्वामी भवानी दयाल जी के विषय में स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि वे अपने विचारों एवं विश्वासों के पक्के थे, और आदर्शों की पूर्ति में हमेशा प्रयत्नरत रहे । वे हिन्दू धर्म तथा भारतीय गौरव को शुद्ध वैदिक दृष्टिकोण से देखते थे । वे इन मूल्यों के प्रति समर्पित थे ,और अपने प्रियजनों को भी साथ लेते थे । उन्होंने अपनी पत्नी जगरानी के बारे में कटु एवं व्यंग्यपूर्ण शब्द कहे थे – कि सुन्दर थी लेकिन "लिख लोढ़ा और पढ़ पत्थर" यानी अपढ़ थी । भाषा की बात तो अलग रहने दी जाए – आर्य समाजी प्रक्रिया "शुद्धि" को लेकर भी उनका मत था कि परंपरागत सनातनी हिन्दुओं को भी शुद्धि कराके आर्य समाज में प्रवेश मिलना चाहिए) 1947 : 71(। उन्होंने दक्षिण अफ़्रीका के नेटाल और ट्रान्सवाल प्रान्तों में हिन्दी की सेवा की, पाठशालाएँ चलाईं ,पत्र भी निकाले और दो बार साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया । उनके साहित्य पर आगे चर्चा होगी ।

To be continued…

Bharat: President's Award for Hindi

Hindi Diwas: September 14, 2018: Dr Saket Kumar Sahay receives President's Award for his contribution in the promotion of Hindi